उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल)

हाईस्कूल परीक्षा "अ"
(उत्तराखण्ड) 10 पन्ने

केन्द्र संख्या की मुहर | केन्द्र | हस्ताक्षर

नोट– केन्द्र के नाम की मुहर उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग पर न लगाएं।

नोट–परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग में अपना नाम व केन्द्र का नाम न लिखें।

'ब' उत्तर पुस्तिका की संख्या–

$ब_1$	$ब_2$	$ब_3$	$ब_4$

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक–

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायेगा–

अनुक्रमांक (अंकों में)–

अनुक्रमांक (शब्दों में)–

विषय–

प्रश्नपत्र संकेतांक–

परीक्षा का दिन–

परीक्षा तिथि–

कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाय–

केन्द्र संख्या–

परीक्षा कक्ष संख्या–

उपरोक्त सभी प्रविष्टियों की जाँच मेरे द्वारा सावधानीपूर्वक कर ली गयी है।

कक्ष निरीक्षक का नाम–

दिनांक–

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक–

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन समुचित प्रश्न-पत्र संकेतांक तथा मूल्यांकन निर्देशों के अनुसार किया है। प्राप्तांकों का मुखपृष्ठ पर अग्रसारण कर प्राप्तांकों एवं प्राप्तांकों के योग का मिलान कर लिया गया है। एवार्ड ब्लैंक में प्राप्तांकों की अंकना कर उनका पुनः मिलान भी कर लिया है। किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए मैं उ रहूँगा/रहूँगी।

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं संख ...

1. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या... .....

2. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या.....

सन्निरीक्षा प्रयोगार्थ

सन्निरीक्षा पूर्व अंक–

सन्निरीक्षा पश्चात् अंक–

त्रुटि का प्रकार–

दिनांक–

हस्ताक्षर निरीक्षक–

परीक्षक, निम्न तालिका में प्रत्येक प्रश्न तथा उसके खण्डों के प्राप्तांकों का विवरण यथास्थान भरें।

प्रश्न संख्या	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	योग
01											
02											
03											
04											
05											
06											
07											
08											
09											
10											
11											
12											
13											
14											
15											
16											
17											
18											
19											
20											
21											
22											
23											
24											
25											
26											
27											
28											
29											
30											

योग (शब्दों में)... योग (अंकों में)

प्रश्न संख्या '1' का उत्तर :-

उ० :- शिशुओं को प्रेरणादायक, ज्ञानवर्धात्मक एवं आनन्ददायक गीत संगीत सिखाने चाहिए।

प्रश्न संख्या '2' का उत्तर :-

उ० :- फोलिक एसिड की कमी से मैग्लोब्लास्टिक एनीमिया रोग होता है।

प्रश्न संख्या '3' का उत्तर :-

उ० :- विटामिन B_2 का रासायनिक नाम राइबोफ्लेविन है।

प्रश्न संख्या '4' का उत्तर :-

उ० :- आहार नियोजन करते समय आहार में सरलता से उपलब्ध, स्थानीय व ताजी खाद्य सामग्री सम्मिलित की जानी चाहिए,

प्रश्न संख्या '5' का उत्तर:-

उ०:- पारिवारिक आय:- पारिवारिक आय से तात्पर्य है, "कि परिवार के सदस्यों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए परिवार के सदस्यों द्वारा कोई कार्य के उपरांत प्राप्त किया गया धन, आय या सुविधा पारिवारिक आय कहलाती है",

प्रश्न संख्या '6' का उत्तर:-

उ०:- उपभोक्ता का अर्थ:-

उपभोक्ता वह व्यक्ति होता है जो अपनी मूल-भूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए उत्पादकों द्वारा निर्मित वस्तुओं को खरीदता है या उपभोग करता है उपभोक्ता कहलाता है।

प्रश्न '7' का उत्तर:-

उ०:- शैशवावस्था में स्वत्व प्रेम:-

शैशवावस्था में स्वत्व प्रेम का अर्थ है कि माता- पिता का अपने पुत्र या शिशु

के प्रति निस्वार्थ भाव से प्रेम को अभिव्यक्त करना तथा शिशु का अपने माता-पिता व अन्य सदस्यों के प्रति निश्छल प्रेम की भावना स्वत्व प्रेम कहलाता है, इस भावना का विकास बालक या शिशु में उसके संवेगों के द्वारा विकसित होता है।

प्रश्न संख्या '8' का उत्तर:-

उ०:- **बौद्धिक खेल:-** बौद्धिक खेलों से तात्पर्य है कि वे खेल जिनके द्वारा बालक में बौद्धिक विकास तथा प्रतियोगात्मक विकास होता है। बौद्धिक खेल कहलाते हैं।

बौद्धिक खेल, खेल का प्रमुख भाग है, जिसमें बालक का बहुपक्षीय विकास होता है।

उदा०:- अन्ताक्षरी खेलना, कविताएँ तथा कहानियाँ खेलकर बोलना।

प्रश्न संख्या '9' का उत्तर :-

उ० :- अर्द्धनाशवान भोज्य पदार्थ :-

अर्द्धनाशवान भोज्य पदार्थों से तात्पर्य है, वे भोज्य पदार्थ जिनमें नमी तथा शुष्कता मध्यम मात्रा में पायी जाती है तथा जिन्हें नमी में रखने पर वे शीघ्र नष्ट नही होते है, जिनका समय 2 या 3 दिन होता है उसके पश्चात वे नष्ट (नाश) होने लगते है। अर्द्धनाशवान भोज्य पदार्थ कहलाते है।

संग्रह की विधियाँ :- अर्द्धनाशवान भोज्य पदार्थों को खुले वातावरण में रख सकते है परन्तु इनके शीघ्र समाप्त होने की संभावना है तो रेफ्रिजेटरों में रख सकते है,

जैसे :- आलू, प्याज, टमाटर सब्जियाँ आदि,

प्रश्न संख्या '10' का उत्तर :-

उ० :- पारिवारिक आय की विशेषताएँ :-

(1) परिवार के सदस्यों की आवश्यकता की पूर्ति :- पारिवारिक आय के द्वारा परिवार के सदस्यों की मूल-भूत आवश्यकताएँ (रोटी, कपड़ा, मकान) आदि की पूर्ति की जा सकती है।

(2) बचत में सहायक :- पारिवारिक आय बचत में सहायक होती है परिवार सम्बंधी आवश्यकताओं की पूर्ति करके जो बचत के रूप में धन प्राप्त होता है उसके द्वारा आवी पीढ़ी के भविष्य के लिए सहायक सिद्ध होता है।

प्रश्न संख्या '11' का उत्तर :-

उ० :- रेशमी वस्त्रों पर प्रेस करने के सामान्य विधि का प्रयोग किया जाता

जाता है।

1) रेशमी वस्त्र अत्याधिक मुलायम व उचित गुणवत्ता वाले होते हैं। इसीलिए इन वस्त्रों पर प्रेस करने के लिए प्रेस भी उचित गुणवत्ता वाली होनी है।

2) रेशमी वस्त्रों में प्रेस करते समय प्रेस में ताप का निर्धारण निम्न स्तर का रखना चाहिए।

3) क्योंकि रेशमी वस्त्र मुलायम होता है जिसके कारण वह आधिक ताप पर जल जाता है। और रेशमी वस्त्रों में प्राकृतिक चमक होती है।

प्रश्न संख्या '12' का उत्तर :-

उ० :- सेन्फोराइज्ड वस्त्र :-

सेन्फोराइज्ड वस्त्र सूती वस्त्रों को कहा जाता है सूती वस्त्रों का प्रमुख तंतु कपास होता है तथा इन वस्त्रों के तंतु प्राकृतिक होते हैं।

इन वस्त्रों में रिक्त स्थान रहते हैं जिसके कारण इनमें गन्दगी या मैल जल्दी प्रवेश कर जाता है।

इस प्रकार के वस्त्रों को प्रेस करते समय उच्च ताप पर प्रेस को रखना चाहिए। तथा सैन्फोराइज्ड वस्त्रों को धोने के लिए तथा उनमें कड़ापन लाने के लिए कलफ का प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न संख्या '13' का उत्तर :-

उ० :- रोग प्रतिरक्षण :-

हमारा शरीर बेहद संवेदन शील है, और हम बाह्य वातावरण में निवास करते है, जहाँ अनेक प्रकार के जीवाणु विषाणु रहते है जो हमारे शरीर के लिए हानिकारक होते है तथा हमारे शरीर में प्रवेश करते ही हमारा स्वास्थ्य खराब हो जाता है।

हमारे शरीर में विभिन्न प्रकार के रोग होते रहते है।

जैसे:- बुखार आना, खाँसी लगना आदि।

हमारे शरीर में उपस्थित रक्त में इन रोगों से लड़ने के लिए श्वेत रुधिर कणिकाएँ (WBC) उपस्थित है जो हमारे शरीर में उपस्थित रोगाणुओं को नष्ट करती है तथा हमारे शरीर को रोगाणुओं से लड़ने के लिए सक्षम बनाती है।

रोगों से लड़ने की क्षमता को रोग प्रतिरक्षण कहते है।
इन सभी कार्यों का नियमन श्वेत रुधिर कणिकाओं के द्वारा होता है।

इन कणिकाओं को हमारे शरीर का "रक्षक या सैनिक" भी कहा जाता है।

प्रश्न संख्या '14' का उ०:-

उ०:- शिशु के जीवन में रेडियों की भूमिका

शिशु के जीवन में रेडियों की महत्व पूर्ण भूमिका है शिशु जैसे - जैसे विकसित होता है उसमें संवेगात्मक विकास भी होने लगता है, और शिशु को आनन्द को प्राप्त करने की चेतना उत्पन्न होने लगती है।

जैसा कि हम जानते है कि रेडियों एक नित्य साधन है तथा माता इस विषय वस्तु का लाभ प्राप्त करके शिशु के सामने रेडियों शुरू करके अपने कार्य करने लगती है। और बच्चे रेडियों को सुनने के लिए रुचि उत्पन्न करते हैं, रेडियों प्रसारण के द्वारा बच्चों के लिए अनेक कार्यक्रम जैसे :- 'बच्चों की फुलवाड़ी', 'बच्चों के लिए', 'चुन मुन' आदि।

कार्यक्रम प्रसारित किए जाते है जिससे शिशुओं में बौद्धिक तथा गत्यात्मक आदि बहुपक्षीय विकास होते है।

परन्तु रेडियों का अत्यधिक प्रयोग करना बच्चों के लिए हानिकारक भी हो सकता है। बच्चों स्नायु तंत्र तथा शारीरिक क्रियाओं में प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

प्रश्न संख्या '15' का उत्तर

उ०:- खेल का शैक्षिक महत्व :-

खेल एक ऐसी क्रिया है जो स्वतंत्र रूप से की जाती है, तथा जिससे शिशु को आनन्द की प्राप्ति होती है। खेल कहलाता है।

खेल का प्रमुख तत्व स्वतंत्रता होती है, और खेल के द्वारा बालक का शारीरिक विकास उचित रूप से होता है, खेल के द्वारा बालक के मस्तिष्क से सारे तनाव दूर हो जाते है और बालक अपनी शैक्षिक क्रियाओं को उचित रूप से कर लेता है।

कुछ विद्वानों ने खेल के सन्दर्भ अनेक व्याख्यान दिए है "

पढोगे लिखोगे बनोगे हाशियार
" खेलोगे कूदोगे होगें नवाब '

इसी प्रकार विवेकानन्द जी ने खेल के बारे में कहा " आधुनिक भारत के नव युवकों का भविष्य पढने - लिखने के साथ - साथ खेलने से गौरवांनित होगा "

प्रश्न संख्या '16' का उत्तर :-

उ०:- " बचत परिवार के लिए आवश्यक है" इस कथन के पक्ष में तीन कारण निम्नलिखित है।

(1) भावी भविष्य के लिए सहायक:-

बचत, पारिवारिक आय से की जाती है तथा परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए घर के मुखिया के द्वारा बचत की जाती है। बचत भावी भविष्य में होने वाले व्ययों में सहायक सिद्ध होती है।

(2) आकस्मिक व्यय में सहायक:-

यदि कोई परिवार भविष्य के लिए बचत करता है और अचानक उसके परिवार में किसी सदस्य के साथ दुर्घटना घटित हो जाती है तो वह तुरंत बचत किए हुए धन का प्रयोग करेगा इसीलिए बचत इस रूप में भी सहायक सिद्ध होती है।

(3) परिवार के सदस्यों की आवश्यकता :-

परिवार के सदस्यों की आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए बचत पूर्ण से सहायक होती है।

प्रश्न संख्या '17' का उत्तर:-

उ० :- माँड बनाने की गर्म विधि:-

(1) माँड बनाने के लिए चावल का उपयोग किया जाता है।

(2) सर्वप्रथम चावल को बारीक आटे की तरह पीस लें।

(3) तथा उसमें पानी डालकर उसको भिगो कर रख दें।
उसके पश्चात जब आटा पूर्ण रूप से घुल जाएँगा।

(4) तो फिर उस आटे को आग के ऊपर रख दें, उसे सावधानी पूर्वक घुमाते रहें जब तक कि वह घुल न जाए।

(5) उसके पश्चात उसमें मैदा अरारोट आदि आवश्यक सामाग्री को डालें।

(6) उसके पश्चात हमारा चावल का माँड बनकर तैयार हो जाएगा।

-o-

प्रश्न संख्या '18' का उ०:-

उ०:- रंगीन सूती वस्त्रों को धोते समय सावधानियाँ :- रंगीन सूती वस्त्रों को धोते समय निम्न लिखित सावधानियों का ध्यान रखना चाहिए,

सूती वस्त्रों (रंगीन) को धोते समय श्वेत कपड़ों को रंगीन कपड़ो से पृथक कर देना चाहिए, क्यों कि उन वस्त्रों का रंग श्वेत वस्त्रों पर लगने का भय बना रहता है।

रंगीन सूती वस्त्रों को धोते समय अधिक नही रगड़ना चाहिए क्योंकि उनसे रंग निकलने की आशंका रहती है

रंगीन सूती वस्त्रों को भिगोने पर नमक डाल देना चाहिए जिसके कारण वस्त्रों से रंग नही निकलता है,

रंगीन सूती वस्त्रों को धोने के पश्चात सदैव उल्टा करके सुखाना चाहिए जिससे उनका रंग नही निकलता

प्रश्न संख्या '19' का उत्तर :-

उ० :- वस्त्रों पर लगे व्यापारिक चिन्ह :-

वस्त्रों पर लगे व्यापारिक चिन्ह उपभोक्ताओं के लिए जानकारी प्रदान करने के लिए लगाए जाते हैं।

तथा उन चिन्हों से हमें यह ज्ञात होता है वस्तु या वस्त्र किस दुकान का है और उन व्यापारिक चिन्हों के द्वारा वस्त्रों की उचित गुणवत्ता का निर्धारण करते हैं।

वस्त्रों पर लगे व्यापारिक चिन्ह के द्वारा हमें यह ज्ञात होता है कि वस्त्र किस तंतु के द्वारा निर्मित है तथा उसका व्यापार केन्द्र कहाँ है।

अगर हमें वस्त्र उचित गुणवत्ता वाले प्रतीत नही होते है तो हम उन्हें उस स्थान में जाकर वापस करवा सकते हैं।

और इनके द्वारा हमें वस्त्रों की परिसज्जा का ज्ञान होता है।

-o-

प्रश्न संख्या '२०' का उत्तर :-

उ०:- शैशवावस्था में सामाजिक विकास:-

शैशवावस्था में सामाजिक विकास २-३ वर्ष की आयु में होता है। मानव एक सामाजिक प्राणी है और हर मनुष्य शैशवावस्था से होकर गुजरता है। शैशवावस्था में शिशु निसहाय होता है, परन्तु जब वह धीरे-धीरे विकसित होने लगता है। उसमें परिवर्तन होने लगते हैं।

बालक का समाज या विद्यालय में रह कर के विभिन्न संवेगों का उत्पन्न होना तथा समाज में उपस्थित विभिन्न लोगों के प्रति चेतना उत्पन्न होना सामाजिक विकास कहलाता है। सामाजिक विकास बालक में एक निश्चित आयु के उपरांत होता है।

शैशवावस्था में सामाजिक विकास विभिन्न स्तरों में होता है,

(i) दूसरे के प्रति चेतना

(ii) मेल जोल

(iii) लिंग भेद

(i) **दूसरों के प्रति चेतना:-**

जब बालक शैशवावस्था में होता है तो वह किसी के बारे में मनन तथा ध्यान केन्द्रित नही करता है, परन्तु जब बालक नर्सरी या विद्यालय में प्रवेश करता है तो वह एक दूसरे के प्रति सचेत सचेत हो जाता है और ईर्ष्या द्वेष आदि संवेगों का विकास होने लगता है।

(ii) **मेल जोल :-** बालक के सामाजिक विकास के अंतर्गत उसमें मेल जोल की भावना भी जाग्रत होने लगती है और वह अपने मित्र भी बनाने लगता है। तथा उसमें एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या द्वेष प्रेम आदि की भावनाओं का समावेश होने लगता है। जिसके कारण वह एक दूसरों के बारे में सोचने लगता है,

(iii) **लिंग भेद :-** बालक के सामाजिक विकास के अंतर्गत लिंग भेद की जानकारी का समावेश होने लगता है और एक-दूसरे के प्रति चेतना उत्पन्न होने लगती है।

प्रश्न संख्या '21' का उत्तर:-

उ०:- खनिज लवणों का महत्व :-

मानव निरंतर कार्य करने के लिए सक्रिय रहता है और कार्यों को पूर्ण करने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है ऊर्जा की पूर्ति के लिए मनुष्य या प्रत्येक जीव को आहार की आवश्यकता होती है।

आहार केवल भूख शांत करने के लिए ही उत्तरदायी नहीं होती अपितु शरीर को ऊर्जा प्रदान करने के लिए भी उत्तरदायी होती है।

और हमारे शरीर को ऊर्जा प्रदान करने के लिए आहार के प्रमुख तत्व अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। उनमें से एक खनिज लवण है।

खनिज लवण हमारे आहार का एक प्रमुख ऊर्जा दायक तत्व, बिना खनिज लवणों से हमारे आहार है का मात्रा अधूरी है।

खनिज लवणों के बिना हमारे शरीर के विकास की गति में अवरुद्ध उत्पन्न हो जाता है,

खनिज लवणों के कार्य :-

1) खनिज लवणों का हमारे शरीर के क्रियान्वयन में वे अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

2) खनिज लवण हमारे शरीर में अम्ल तथा क्षार की मात्रा में नियंत्रण करते हैं।

3) खनिज लवण हमारे शरीर पाचन क्रिया या चयापचय की क्रिया में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करते हैं।

4) खनिज लवणों के द्वारा प्रोटीन तथा वसा की अत्याधिक खपत नही होती है।

5) खनिज लवणों के हमारे आमाशय में उत्पन्न हाइड्रोक्लोरिक अम्ल का स्रावण सामान्य होता है।

6) खनिज लवणों के द्वारा अम्लता की शिकायत अधिक नही होती है।

खनिज प्राप्ति के स्रोत:- खनिज प्राप्ति के स्रोत वनस्पतिजन्य है। और वे स्रोत हरी सब्जियाँ दूध, माँस, अण्डे व फल है।

प्रश्न संख्या '२२' का उत्तर:-

उ0:- I·C·M·R (इण्डियन काउंसिल मेडिकल रिसर्च) के अनुसार भिन्न-भिन्न आयु के व्यक्तियों में कैलोरिज की मात्रा उनके भोजन तथा स्वास्थ्य के अनुसार निर्धारित की जाती है।

अलग-अलग व्यक्तियों में ऊर्जा की मात्रा भिन्न-भिन्न होती है। तथा उसकी मात्रा का निर्धारण "कैलोरी" के द्वारा की जाती है।

I·C·M·R ने अलग-अलग व्यक्तियों के अनुसार कैलोरिज अर्थात ऊर्जा की मात्रा का निर्धारण किया है। ऊर्जा हमें भोजन या आहार के द्वारा प्राप्त की जाती है। तथा

आहार में विभिन्न प्रकार के तत्व उपस्थित होते हैं। जिसके द्वारा हमारे शरीर में ऊर्जा अर्थात कैलोरीज का समावेश होता है।

I·C·MR द्वारा निर्धारित अलग-अलग व्यक्तियों के लिए कैलोरिज की मात्रा:-

P.T.O

शिशु के लिए कैलोरिज की मात्रा:- एक शिशु के लिए कैलोरिज की मात्रा 50 K किलोरी होनी चाहिए अतः उससे अधिक भी हो सकती है।

बालक के लिए:- बालक के ऊर्जा की मात्रा 100 K कैलोरी होनी आवश्यक है।

किशोर लड़कों व लडकियों के लिए:-

किशोर लडकों व लडकियों के लिए प्रस्तावित ऊर्जा की मात्रा 150K से ज्यादा तक ही होनी चाहिए।

वयस्क पुरुषों में ऊर्जा की मात्रा:-

वयस्क पुरुषों में इसकी मात्रा 200K कैलोरी होनी चाहिए।

वयस्क महिलाओं में:- वयस्क महिलाओं में ऊर्जा की मात्रा 250K होनी चाहिए।

गर्भवती महिलाओं में:- गर्भवती महिलाओं में ऊर्जा की मात्रा अधिक होनी चाहिए लगभग 300K कैलोरी होनी चाहिए।

प्रश्न संख्या '23' का उत्तर :-

उ०:- आहार स्वास्थ्य विज्ञान :-

वह विज्ञान जिसमें आहार सम्बंधी जानकारियों का समावेश होता है। आहार स्वास्थ्य विज्ञान कहलाता है।

आहार स्वास्थ्य विज्ञान का मुख्य केन्द्र (I.C.M.R) इण्डियन काउंसिल मेडिकल रिसर्च है।

इसके अन्तर्गत स्वास्थ्य सम्बंधी जानकारियाँ भी प्रदान की जाती है।

आहार स्वास्थ्य विज्ञान के अनुसार भोजने पकाने की सही विधियों व व्यवस्थाओं का उल्लेख निम्न प्रकार से है।

एक सुव्यवस्थित गृहणी को भोजन एक साफ सुथरे स्थान पर बनाना चाहिए।

तथा भोजनालय या रसोई घर आहार सम्बंधी सारी सामग्री उपलब्ध हों।

भोजन को पकाते समय निर्मित भोजन से सम्बंधित सारी जानकारियों का ज्ञान होना चाहिए।

तथा भोजन को पकाते समय स्थान पर जल के द्वारा साफ कर लेना चाहिए।

तथा सब्जियों व अन्य सामाग्री को बनाते समय साफ या धुल लेना चाहिए। क्योंकि बाजार में इन्हें पकाने के लिए निम्न रसायनों का प्रयोग किया जाता है।

तथा रसोई घर की नियमित सफाई करनी चाहिए जिसके कारण रसोई घर में फंफूदी एंव जीवाणुओं के उत्पन्न होने की संभावना रहती है।

भोजन को पकाने के लिए गृहणी को स्वाद का विशेष प्रकार का ध्यान होना चाहिए।

प्रश्न संख्या '२४' का उ०:-

उ०:- पारिवारिक साधन वे साधन होते हैं जिसके द्वारा परिवार के सदस्यों की आवश्यकता की पूर्ति की जाती है।

पारिवारिक संसाधन दो प्रकार के होते है। मानवीय संसाधन, अमानवीय संसाधन

पारिवारिक संसाधनों की विशेषताएँ निम्नलिखित है।

(1) पारिवारिक संसाधन सीमित होते हैं:-

पारिवारिक संसाधन हमारे पास सीमित मात्रा में उपस्थित होते है तथा उन संसाधनों के द्वारा परिवार के सदस्यों की आवश्यकता की पूर्ति सीमित मात्रा में की जा सकती है।

(2) पारिवारिक संसाधनों के द्वारा परिवार के सदस्यों की आवश्यकता की पूर्ति

पारिवारिक संसाधनों के द्वारा परिवार के सदस्यों की आवश्यकता की पूर्ति की जा सकती है।

पारिवारिक संसाधनों द्वारा भौतिक सुविधाएं :-

पारिवारिक संसाधनों के द्वारा भौतिक सुविधाओं की पूर्ति की पूर्ति की जैसे धन तथा भौतिक सुविधाएँ एंव सामुदायिक सुविधाएं प्राप्त की जा सकती है।

पारिवारिक संसाधनों के द्वारा श्रम की बचत :-

पारिवारिक संसाधनों के द्वारा श्रम की बचत की जा सकती है। तथा व्यक्ति के विभिन्न पक्षों में सहायता प्रदान होती है।

— -o- —

प्रश्न सं० 25 क

(क) दोष पूर्ण मापतौल की समस्या :-

उपभोक्ताओं के शोषण का सबसे मुख्य कारक है। दोष पूर्ण मापतौल की समस्या,

उत्पादक या सामान विक्रेता भोले भाले उपभोक्ताओं के साथ विश्वास घात करते है तथा उन्हें माप तौल करके लूट लेते है।

कुछ उपभोक्ता विश्वास करके माप स्वंय न करकर दुकान दार को करने के लिए कहते है, परन्तु दुकान दार कम तौल कर या रुपये अधिक लेकर के उनके साथ विश्वास घात कर लेते है।

इन सभी प्रक्रियाओं के द्वारा उपभोक्ताओं का शोषण होता है। इन सभी प्रक्रियाओं को देखकर हमारे प्रधान मंत्री ने उपभोक्ता के हित के लिए, "उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986" की स्थापना की,

(ख) वस्तुओं का उपलब्ध न होने की संभावना:-

उपभोक्ताओं के शोषण का सबसे महत्व पूर्ण कारक है कि वस्तुओं का उपलब्ध न होने की समस्या

उत्पादक वस्तु को समय पर उपभोक्ता तक न पहुंचाकर उपभोक्ता के साथ छल करते हैं।

वस्तु को प्राप्त करने के लिए उपभोक्ता को दुकान या बाजार के चक्कर लगाने पड़ते हैं, जिसके द्वारा उपभोक्ता का शोषण किया जाता है।

इसके सम्बंध में उपभोक्ताओं को अधिकार दिए जाते है

— o —

27 उ०:-

क उ० - रिकेटस

ख - आहार नियोजन

ग - मानवीय संसाधन

घ - डाकघर

ङ - जागरूकता

च - सूती वस्त्र

26

उ०:- वस्त्रों पर लगे दाग धब्बों को हटाने के लिए निम्न प्रकार की सावधानियों का प्रयोग किया जाता है।

जिन वस्त्रों पर दाग लगे होते हैं उन पर नीचे से शोषक कागज लगा लें।

निम्न रसायनों का प्रयोग करके उपयुक्त रसायनों का प्रयोग किया जाता है।

फिर उसको पानी से धो लिया जाता है।

रो० नं- 20051623